पाठ 18

कर्तव्यपालन

(प्रस्तुत एकांकी में वनरक्षक के कर्तव्यपालन का सहज, सुन्दर और रोचक वर्णन है।)

पात्र

राजा, वनरक्षक (जंगल का रखवाला), राजा के दरबारी

स्थान -- जंगल का रास्ता

समय -- शाम

(राजा जंगल से निकलकर एक रास्ते के किनारे खड़ा है।)

राजा: (यकायक पहुँचकर) यह तो किसी के घर का रास्ता है। यह सबके लिए खुला नहीं हो सकता। (खड़े-खड़े होंठों पर उँगली रख कर) मैं राजा हूँ। आश्चर्य है, अँधेरा मेरी कुछ भी परवाह नहीं करता, वह बढ़ता ही आ रहा है। मामूली आदमी की तरह मैं भी भूल और भटक सकता हूँ। पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण दिशाएँ भी, जो मेरा आतंक मानती थीं, इस समय सब चुप हैं। दरबार में बढ़-बढ़कर बातें करने वाली मेरी बुद्धि इस समय नहीं बता सकती कि मैं किधर जाऊँ। (किसी की आहट सुनता है) कोई्र आ रहा है। मुझे क्या करना चाहिए। क्या कुछ राजापन दिखाऊँ। नहीं, नहीं, फेंको इस राजापन के ढोंग को। मनुष्य होने का लाभ लो।

(वनरक्षक का प्रवेश)

वनरक्षक: आज मैं बदमाश को पकड़ पाया। तुम कौन हो?

राजा: मैं बदमाश नहीं, तुमको विश्वास दिलाता हूँ।

वनरक्षक: अच्छी बात है। किसने बन्दूक चलायी।

राजा: मैंने नहीं चलायी।

वनरक्षक: (तिरस्कार के स्वर में) तुम झूठ बोलते हो।

राजा: (मन में) झूठ बोलता हूँ। कैसे दु:ख की बात है कि मैं राजा होकर एक अपराधी की तरह सुन रहा हूँ। (प्रकट) तुम मेरी बात का विश्वास करो। भाई, मैंने बन्दूक नहीं चलायी।

वनरक्षक: अच्छा, अच्छा इधर आओ तुमने राजा के एक हिरन को गोली मारी। क्या नहीं मारी?

राजा: नहीं, सचमुच नहीं। मैं खुद राजा का बहुत सम्मान करता हूँ। मैंने भी गोली की आवाज सुनी है और मुझे भय है कि कुछ चोर या डाकू जंगल में छिपे हुए हैं।

वनरक्षक: मुझे यकीन नहीं। खैर, तुम कौन हो और तुम्हारा नाम क्या है?

राजा: (गम्भीर होकर) मेरा नाम!

वनरक्षक: हाँ, तुम्हारा नाम। तुम्हारा कोई नाम तो होगा ही। क्या नहीं है? तुम कहाँ रहते हो और करते क्या हो?

राजा: इन प्रश्नों का उत्तर देने का मुझे अभ्यास नहीं है।

वनरक्षक: हो सकता है, पर ये ही प्रश्न हैं, जिनके उत्तर देने से सच्चे आदमी को डर नहीं लगता। खैर, अगर तुम अपने बारे में कोई साफ उत्तर नहीं देना चाहते हो, तो मत दो, मगर तुम जाना कहाँ चाहते हो? चलो मैं तुमको बाहर निकाल आऊँ।

राजा: (क्षुब्ध होकर) तुम। किस अधिकार से?

वनरक्षक: (जोश के साथ) मैं राजा का वनरक्षक पुंडरीक हूँ, इस अधिकार से।

राजा: (गौर से देखकर) पुंडरीक।

वनरक्षक: (अकड़ के साथ) जी हाँ, पुंडरीक। किसी आदमी को, जिस पर मुझे शक होता है और जब तक वह अपना परिचय, जितना तुमने दिया है उससे अधिक नहीं देता, मैं इस राह से नहीं जाने देता।

राजा: अच्छी बात है, भाई। मुझे बड़ी खुशी है कि मेरी तरह तुम भी राजा के एक अच्छे अफसर हो। अगर तुम विश्वास करो .....

वनरक्षक: नहीं, तुम विश्वास के पात्र नहीं हो।

राजा: मैं राजा का एक अफसर हूँ । मैं राजा के साथ इस जंगल में शिकार खेलने के लिए आया था और यहाँ राह भूल गया हूँ। जंगल में मुझे रात हो गयी और मैं घर से बहुत दूर पड़ गया हूँ।

वनरक्षक: इसमें सच्चाई की कमी है। अगर तुम शिकार को निकले थे तो तुम्हारा घोड़ा कहाँ है?

राजा: घोड़ा थक कर गिर पड़ा, मैंने उसे छोड़ दिया ।

वनरक्षक: यदि मैं तुम्हारी बात का विश्वास न करूँ .....

राजा: मैं झूठ नहीं बोलता, भले आदमी ।

वनरक्षक: वाह! वाह! दरबार में रहते हो और झूठ नहीं बोलते।

राजा: खैर! तुम जैसा समझो? मगर मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ। यह मैं तुमको विश्वास दिलाता हूँ। यदि तुम कभी राजधानी में आओगे, तो मैं तुमको दिखा दँूगा कि मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ। (जेब से एक रुपया निकाल कर और पुंडरीक की ओर हाथ बढ़ाकर) यह लो इनाम और आज रात को मुझे अपनी झोपड़ी में रहने दो।

(वनरक्षक राजा का मुँह देखता है)

यदि यह कम हो, तो सबेरे तुम जो कहोगे, वही तुमको दूँगा। और खुश कर दूँगा।

वनरक्षक: (जोर से हँसकर) ओहो, अब मैंने माना कि तुम दरबारी हो आज के लिए तो एक छोटी रिश्वत और कल के लिए एक बड़ा-सा वादा। एक ही साँस में दोनों। मगर मेरे दोस्त, यह दरबार नहीं है।

राजा: (क्रोध से) तू एक नीच आदमी है। जबान सँभालकर नहीं बोलता। मैं तेरे बारे में अधिक जानना चाहता हूँ।

वनरक्षक: (लापरवाही से) 'तू' और 'तेरे' शब्द को इस तरह लापरवाही से मत फेंको, मैं भी उतना ही भला आदमी हूँ जितने तुम हो।

राजा: (शान्त होकर) क्षमा करो, मित्र।

वनरक्षक: (मुस्कुराकर) मैं क्रोध में नहीं हूँ, पर जब तक तुम्हारी सच्चाई पर मेरा सन्देह है, तब तक मैं तुमसे विशेष प्रेम-भाव नहीं दिखला सकता ।

राजा: तुम ठीक कहते हो, पर मैं तुमको कैसे विश्वास दिला सकता हूँ।

वनरक्षक: ओह! तुम जैसा मुनासिब समझो, करो। राजधानी यहाँ से दस मील (16किलोमीटर) पर तो है। तुम अभी राजधानी जाना चाहो, तो मैं तुमको रास्ता बताऊँगा और अगर तुम रात भर इस गरीब के घर में टिकना पसन्द करो, तो मेरे सिर आँखों पर रहो। सबेरे मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।

राजा: क्या तुम अभी साथ नहीं चल सकते ।

वनरक्षक: नहीं, चाहे तुम राजा ही क्यों न हो ।

राजा: तब तो चलो, मैं तुम्हारे ही घर में रात काटूँगा ।

(घोड़े पर सवार एक सरदार का प्रवेश)

दरबारी: महाराज ! कुशल से तो हैं? महाराज के लिए हमने सारा जंगल छान डाला।

वनरक्षक: (चकित होकर, आँखें फाड़कर) कौन? महाराज । तब तो मुझसे बड़ी भूल हुई महाराज, आपके साथ मैंने जो ढिठाई की, उसे क्षमा कीजिए।

(राजा तलवार खींचता है)

वनरक्षक: महाराज, आप अपने उस सेवक का वध निश्चय ही नहीं करेंगे, जिसने ईमानदारी से अपना फर्ज अदा किया है।

राजा: नहीं, मेरे सच्चे बहादुर मित्र! नहीं, मैं तुमको क्षमा नहीं कर सकता। मैं तुम्हारे जैसे नेक और सच्चे आदमियों के सम्मान का ऋणी हूँ। उठो, राजरत्न पुंडरीक, उठो ! अपनी पदवी का प्रमाण और मेरी प्रसन्नता का चिह्न यह तलवार लो।

पर्दा गिरता है |

- राम नरेश त्रिपाठी

रामनरेश त्रिपाठी का जन्म सन् 1889 ई. को जिला जौनपुर, (उत्तर प्रदेश) के कोइरीपुर ग्राम में हुआ था | साहित्य की अनेक विधाओं में आपने रचनाएँ की हैं | इनकी रचनाओं में नवीन आदर्श और नवयुग का संकेत है | आप द्वारा रचित 'पथिक'. 'मिलन', 'मानसी' और स्वप्न आपकी प्रमुख कृतियाँ हैं | 16 जनवरी सन् 1962 ई. में इनका देहावसान हो गया था |

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. कक्षा में इस एकांकी का अभिनय प्रस्तुत करें।

2. इस एकांकी को संक्षेप में कहानी के रूप मंे लिखिए।

3. इस पाठ में वनरक्षक की कर्तव्यपरायणता को उभारा गया है। आपके गाँव/नगर में कर्तव्यपालन के लिए प्रसिद्ध महिलाआंे और पुरुषांे के नाम और उनकी विशेषताएँ लिखिए।

विचार और कल्पना

1. यदि इस एकांकी के मंचन में आपको कोई भूमिका करनी पड़े तो किस पात्र की भूमिका करना चाहेंगे और क्यों?

2. इस एकांकी में आप ने पढ़ा, कि बीच-बीच में कुछ संकेत कोष्ठक में दिये गये हैं, जैसे (राजा जंगल से निकल कर एक रास्ते के किनारे खड़ा है) (तिरस्कार के स्वर में)

स्थान- जंगल का रास्ता, समय-शाम.....आदि। ऐसे निदर्शों/संकेतों से नाटक के दृश्य स्पष्ट होते हैं तथा नाटक को मंच पर अभिनीत करने में सुगमता होती है।

कल्पना कीजिए- यदि रात का दृश्य मंच पर दिखाना हो तो क्या-क्या संकेत देंगे?

एकांकी से

1. राजा द्वारा ली गयी परीक्षा में वनरक्षक किस प्रकार खरा उतरता है ?

2. नीचे लिखे वाक्य के तीन सम्भावित उत्तर दिये गये हैं, सही उत्तर पर सही का चिह्न लगाइए तथा उसका कारण भी लिखिए।

राजा ने तलवार खींच ली क्योंकि-

(क) वह वनरक्षक को दंड देना चाहता था।

(ख) वह वनरक्षक को क्षमा करना चाहता था।

(ग) वह वनरक्षक को सम्मान देना चाहता था।

3. वनरक्षक द्वारा परिचय पूछे जाने पर राजा क्या उत्तर देते हैं?

4. वनरक्षक को राजा पर क्या संदेह होता है ?

5. राजा द्वारा यह कहने पर कि यदि एक रुपया कम हो तो सवेरे और भी दूँगा, वनरक्षक ने राज दरबार और दरबारी के विषय मंे क्या कहा ?

6. वनरक्षक को उसकी नेकी और ईमानदारी का क्या फल मिला?

7. एकांकी में वनरक्षक के व्यक्तित्व की किन-किन विशेषताओं का पता चलता है ?

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग और प्रत्यय युक्त शब्दों को छाँटकर अलग-अलग लिखिए-

अभिमान, चमकीला, सच्चाई, सम्मान, ईमानदारी, विशेष, प्रसन्नता, निकलकर।

2. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

तिरस्कार, यकीन, मुनासिब, रिश्वत, ढिठाई, फर्ज।

3. निम्नलिखित वाक्यांशों के लिए एक-एक शब्द लिखिए -

(क) किसी बात की परवाह न करने वाला।

(ख) वन की रक्षा करने वाला।

(ग) जो विश्वास करने योग्य हो।

(घ) जो रिश्वत लेता हो।

(ड.) जो क्षमा करने योग्य न हो।

4. नीचे दिये गये वाक्यों में से सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य और मिश्रित वाक्य अलग-अलग कीजिए-

(क) मुझे पता तो चल गया कि मैं मनुष्य भी हूँ ।

(ख) आज मेरा सारा अभिमान मुझे झूठा जान पड़ रहा है ।

(ग) तुम कहाँ रहते हो और करते क्या हो ?

(घ) मैंने माना कि तुम दरबारी हो, आज के लिए तो एक छोटी-सी रिश्वत और कल के लिए एक बड़ा सा वादा।

(ड.) आज मैं बदमाश को पकड़ पाया।

5. इस एकांकी को पढ़कर-

(क) आपने क्या नया सीखा ?

(ख) क्या करने लगेंगे, जो अभी नहीं करते हैं ?

इसे भी जानें

दिनांक 28 जुलाई को प्रति वर्ष ‘वन महोत्सव दिवस’ के रूप तथा 5 जून को ‘पर्यावरण दिवस’ के रूप में मनाया जाता है।